आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कहानी का परिचय – भिक्षुक और धनिक
» सुभाषितम् – आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थः महान् रिपुः
» पदच्छेदः, अन्वयः तथा भावार्थः
» शब्दार्थाः – पाठ की शब्दावली
» द्वितीया विभक्तिः का परिचय
» द्वितीया विभक्तिः के रूप – तीनों लिङ्ग एवं सर्वनाम
» अभ्यासः एवं अतिरिक्त श्लोकाः

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. कहानी की शुरुआत में भिक्षुक की क्या स्थिति थी, और वह क्या गलती कर रहा था?

› पाठ से जानकारी लें: 'सः उन्नतः दृढकायः च युवकः आसीत्' – भिक्षुक लंबा और मज़बूत शरीर वाला युवक था।

› फिर भी 'सः भिक्षाटनं करोति स्म' – वह भीख माँगता था।

› इसका अर्थ है – उसके पास परिश्रम करने की पूरी शारीरिक क्षमता थी, पर उसने आलस्यवश भीख माँगना चुना।

उत्तर – भिक्षुक शारीरिक रूप से सक्षम (दृढकायः) था, फिर भी उसने परिश्रम के बजाय भीख माँगने का रास्ता चुना – यही उसकी मूल गलती थी, जो आगे चलकर कहानी का मुख्य पाठ (आलस्य त्याग कर परिश्रम करना) बनती है।

उदाहरण 2. श्लोक 'आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः। नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति।।' में किसे शत्रु और किसे मित्र कहा गया है, और क्यों?

› पहली पंक्ति में 'आलस्यं ... महान् रिपुः' – आलस्य को महान् शत्रु कहा गया है क्योंकि यह मनुष्य के शरीर में ही रहकर उसे कार्य करने से रोकता है।

› दूसरी पंक्ति में 'उद्यमसमो बन्धुः' – उद्यम (परिश्रम) को मित्र के समान बताया गया है, क्योंकि 'कृत्वा यं नावसीदति' अर्थात् उद्यम करके मनुष्य कभी दुःखी नहीं होता।

› इस प्रकार शत्रु और मित्र दोनों मनुष्य के अपने भीतर के गुण हैं, कोई बाहरी व्यक्ति नहीं।

उत्तर – आलस्य को शत्रु और उद्यम (परिश्रम) को मित्र कहा गया है, क्योंकि आलस्य मनुष्य को असफल बनाता है जबकि परिश्रम उसे सफलता और सुख की ओर ले जाता है।

उदाहरण 3. 'शरीरस्थः महान् रिपुः' पद का पदच्छेद तथा सरल भावार्थ बताइए।

› यह पहले से ही दो अलग शब्द हैं इसलिए पदच्छेद की सीधी आवश्यकता नहीं, पर संधि-सजगता के लिए ध्यान दें कि यह 'शरीर' + 'स्थः' से बना है।

› 'शरीरस्थः' का अर्थ है 'शरीर में स्थित/रहने वाला' और 'महान् रिपुः' का अर्थ है 'बड़ा शत्रु'।

› इसलिए पूरे पद का भावार्थ है – 'शरीर में रहने वाला बड़ा शत्रु', यानी आलस्य कहीं बाहर से नहीं आता, वह मनुष्य के भीतर ही बसा रहता है।

उत्तर – 'शरीरस्थः महान् रिपुः' का भावार्थ है – मनुष्य के अपने शरीर में ही रहने वाला महान् शत्रु, अर्थात् आलस्य कोई बाहरी शत्रु नहीं बल्कि हमारे भीतर का ही दोष है।

उदाहरण 4. 'भिक्षुकः धनिकस्य प्रस्तावं निराकृतवान्' वाक्य का हिन्दी और अंग्रेज़ी में अर्थ लिखिए।

› 'भिक्षुकः' = भिखारी (the beggar) – कर्ता

› 'धनिकस्य प्रस्तावम्' = धनिक के प्रस्ताव को – कर्म

› 'निराकृतवान्' = अस्वीकार किया (refused) – क्रिया

उत्तर – हिन्दी: भिखारी ने धनिक के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। English: The beggar refused the rich man's proposal.

उदाहरण 5. 'बालकः पुस्तकं पठति' वाक्य में द्वितीया विभक्ति वाला शब्द पहचानिए और बताइए वह कर्म क्यों है।

› वाक्य में क्रिया है 'पठति' (पढ़ता है)।

› प्रश्न पूछें – 'क्या पढ़ता है?' उत्तर मिलेगा 'पुस्तकम्'।

› चूँकि 'पुस्तकम्' पर पढ़ने की क्रिया का सीधा प्रभाव पड़ रहा है, यह द्वितीया विभक्ति (कर्म) है – मूल शब्द 'पुस्तक' में 'म्' प्रत्यय जुड़ा है।

उत्तर – 'पुस्तकम्' द्वितीया विभक्ति एकवचन में है, क्योंकि यह 'पठति' क्रिया का कर्म है – मूल शब्द 'पुस्तक' है।

उदाहरण 6. 'नदी' शब्द (ईकारांत स्त्रीलिंग) के द्वितीया विभक्ति के तीनों रूप (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) बताइए।

› ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों में द्वितीया विभक्ति एकवचन में 'ईम्' जुड़ता है – नदी + म् = नदीम्।

› द्विवचन में विशेष रूप से 'यौ' जुड़ता है और 'ई' 'य्' में बदल जाती है – नदी नद्यौ।

› बहुवचन में 'ईः' जुड़ता है – नदी + ◌ः = नदीः।

उत्तर – नदी के द्वितीया विभक्ति के रूप हैं – एकवचन: नदीम्, द्विवचन: नद्यौ, बहुवचन: नदीः।

उदाहरण 7. पहले अतिरिक्त श्लोक 'विना वेदं विना गीतां...' का सरल भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

› श्लोक में चार चीज़ों का नाम है – वेद, गीता, रामायण की कथा, और कालिदास का काव्य।

› 'विना' शब्द बार-बार आता है जिसका अर्थ है 'के बिना' – यानी इनके बिना कुछ अधूरा है।

› अंतिम पंक्ति 'भारतं भारतं न हि' कहती है कि इन चारों के बिना भारत, भारत नहीं रहता – अर्थात् भारत की पहचान इन्हीं ग्रंथों से है।

उत्तर – भावार्थ: वेद, भगवद्गीता, रामायण की कथा और कालिदास के काव्य के बिना भारत अपनी सच्ची पहचान खो देता है – ये चारों भारत की सांस्कृतिक आत्मा हैं।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है 'भिक्षुकः किं करोति स्म?' – उत्तर हमेशा एकपद में दें: 'भिक्षाटनम्' या 'सः भिक्षाटनं करोति स्म'।

• यह श्लोक परीक्षा में शब्दशः (word for word) लिखने के लिए अक्सर आता है – वर्तनी पर विशेष ध्यान दें: 'शरीरस्थो' में विसर्ग-संधि और 'उद्यमसमो' में भी संधि है।

• परीक्षा में जब भी 'पदच्छेदं कुरुत' या 'अन्वयं लिखत' पूछा जाए, संधि के नियम ध्यान में रखते हुए शब्दों को सावधानी से अलग करें – जल्दबाज़ी में गलत विभाजन बहुत आम गलती है।

• शब्दार्थ वाले प्रश्नों में अक्सर सीधे शब्द देकर हिन्दी/अंग्रेज़ी अर्थ पूछा जाता है – पुस्तक की तालिका को बार-बार दोहराएँ, वर्तनी में एक भी मात्रा की गलती अंक कटवा सकती है।

• वाक्य-निर्माण के प्रश्नों में सबसे पहले कर्ता (प्रथमा), फिर कर्म (द्वितीया), और अंत में क्रिया लिखने का क्रम अपनाएँ – यही मानक संस्कृत वाक्य-रचना है।

• रूप-परिवर्तन के प्रश्नों में शब्द का मूल रूप (जैसे 'भिक्षा' न कि 'भिक्षाम्') सही पहचानना पहला कदम है – गलत मूल-शब्द पहचानने से पूरा उत्तर गलत हो जाता है।

• आम्/न वाले प्रश्नों में हमेशा पाठ की मूल पंक्ति से मिलान करके ही उत्तर दें, अनुमान से नहीं – परीक्षक अक्सर पाठ में हल्का बदलाव करके भ्रामक कथन देते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› याद रखें: भिक्षुक 'उन्नतः दृढकायः च युवकः' था – कहानी की मूल विडंबना यही है कि सक्षम होकर भी वह परिश्रम नहीं करता था।

› श्लोक के दो मुख्य शब्द याद रखें – 'रिपुः' (शत्रु = आलस्य) और 'बन्धुः' (मित्र = उद्यम)।

› पदच्छेद = तोड़ना, अन्वय = क्रम जमाना, भावार्थ = अर्थ समझना – यह क्रम हमेशा याद रखें।

› शब्दार्थ याद करते समय हमेशा उपसर्ग (जैसे 'नि' में निराकृतवान्) और मूल धातु (जैसे 'कृ' से कृतवान्/आकृतवान्) पर ध्यान दें।

› द्वितीया विभक्ति पहचानने का सरल तरीका – क्रिया से पहले 'किसको/क्या' पूछें, उत्तर वाला शब्द ही कर्म है।

› हमेशा पहले शब्द का लिंग और अंत्याक्षर पहचानें, फिर सही तालिका (पुंलिंग/स्त्रीलिंग/नपुंसकलिंग/सर्वनाम) से रूप निकालें।

› अभ्यास हल करने से पहले कहानी और श्लोक दोनों को दोबारा ध्यान से पढ़ें – जल्दबाज़ी में गलत उत्तर बचने का यही सबसे अच्छा तरीका है।